भारत सरकार
विदेश मंत्रालय

लोक सभा
तारांकित प्रश्न संख्या 97
दिनांक 08.12.2023 को उत्तर दिए जाने के लिए

सागर हेतु विज़न

***97. श्री राजेन्द्र धेड्या गावितः**
डॉ. (प्रो.) किरिट प्रेमजीभाई सोलंकी:

क्या **विदेश** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) 'नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी', 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी', 'थिंक वैस्ट पॉलिसी' और 'कनेक्ट सेंट्रल एशिया पॉलिसी' का ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या इन नीतियों से 'सागर' [सेक्यूरिटी एंड ग्रोथ फॉर ऑल इन द रिजन] (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास) संबंधी सरकार के दृष्टिकोण को साकार करने में योगदान मिला है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ग) जी–20 की अध्यक्षता के सफल समापन के फलस्वरूप हमारे देश को क्या ठोस और अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्त हुए हैं; और

(घ) ऑपरेशन कावेरी, ऑपरेशन गंगा और ऑपरेशन अजय की क्या विशेषताएं हैं?

उत्तर
विदेश मंत्री
(डॉ. सुब्रह्मण्यम जयशंकर)

(क) से (घ): विवरण सदन के पटल पर रख दिया गया है।

*****

"सागर हेतु विज़न" के संबंध में दिनांक 08.12.2023 के लोक सभा तारांकित प्रश्न संख्या *97 के भाग (क) से (घ) के उत्तर में उल्लिखित विवरण।

(क) से (घ):

i. भारत की विदेश नीति का केंद्र बिंदु अभी भी उसका निकटतम और विस्तारित पड़ोसी क्षेत्र है। इस क्षेत्र के देशों के साथ भारत के ऐतिहासिक और सभ्यतागत संबंध हमारे पड़ोसी देशों और उससे आगे के क्षेत्रों के संबंध में हमारे दृष्टिकोण का मार्गदर्शन करते हैं। 'नेबरहुड फर्स्ट नीति', 'एक्ट ईस्ट नीति', 'थिंक वैस्ट नीति', 'कनेक्ट सेंट्रल एशिया नीति' और 'सागर' की अवधारणा, जिसका अर्थ क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास है, क्रमशः संबंधित देशों के साथ हमारी सहभागिता में व्यापक रूप से वृद्धि करने का प्रयास करते हैं। इन नीतियों का विवरण **अनुबंध क** में दिया गया है।

ii. भारत की जी20 अध्यक्षता ने जी20 को एक नई गतिशीलता और बल प्रदान किया तथा विभिन्न वैश्विक मुद्दों के संबंध में विकासशील देशों और उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के बीच आम सहमति बनाई। भारत की जी20 अध्यक्षता के दौरान, सभी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों को शामिल करते हुए पूरे भारत में 60 शहरों में 40 विभिन्न तंत्रों के तहत 220 से अधिक बैठकें सफलतापूर्वक आयोजित की गईं। इन बैठकों में जी20 सदस्य देशों, अतिथि देशों और आमंत्रित अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इन बैठकों में भारत की विविधता, समावेशी परंपराओं और सांस्कृतिक समृद्धि को प्रदर्शित करने वाले विशिष्ट अनुभव भी प्रतिनिधियों के कार्यक्रम का हिस्सा रहे।

iii. भारत ने जी20 शिखर सम्मेलन की कार्यसूची और विचार–बिंदुओं को आकार देने में ग्लोबल साउथ और विकासशील देशों की आवाज़ और चिंताओं को भी बढ़–चढ़कर स्थान दिया। भारत ने अफ्रीकी संघ की सदस्यता का प्रबल समर्थन किया और इसके परिणामस्वरूप सितंबर 2023 में नई दिल्ली जी20 शिखर सम्मेलन में अफ्रीकी संघ को जी20 में स्थायी सदस्य के रूप में शामिल किया गया। 09 सितंबर 2023 को नई दिल्ली में जी20 नेताओं के शिखर सम्मेलन में 'जी20 नई दिल्ली जी20 नेताओं का घोषणापत्र' (एनडीएलडी) सर्वसम्मति से अंगीकृत किया गया तथा इस घोषणापत्र में ग्लोबल साउथ सहित पूरे विश्व के देशों से संबंधित अनेक महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर विचार किया गया है। इस घोषणापत्र में भारत के नेतृत्व वाली पहलों का उल्लेख भी किया गया है, जैसे 'ग्लोबल बायोफ्यूल एलायंस', जिसका उद्देश्य परिवहन क्षेत्र को शामिल करते हुए, सहयोग को सुविधाजनक बनाना और स्थायी जैव ईंधन के उपयोग में तीव्र वृद्धि करना है तथा 'वन फ्यूचर एलायंस', जो एक स्वैच्छिक पहल है जिसका उद्देश्य क्षमता निर्माण करना और तकनीकी सहायता उपलब्ध कराना तथा निम्न और मध्यम आय वाले देशों में डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (डीपीआई) को लागू करने के लिए पर्याप्त वित्त पोषण संबंधी सहायता प्रदान करना है।

iv. ऑपरेशन कावेरी के तहत भारत सरकार ने अप्रैल–मई 2023 में सूडान में फंसे 4097 लोगों को निकाला। सूडान से निकाले गए 4097 व्यक्तियों में से 3961 भारतीय नागरिक और 136 विदेशी नागरिक थे।

v. फरवरी और मार्च, 2022 में लगभग 22,500 भारतीय नागरिक यूक्रेन से भारत लौटे। इसमें से ऑपरेशन गंगा के तहत, 18,282 भारतीय नागरिकों को 90 निकासी उड़ानों द्वारा यूक्रेन से वापस लाया गया जिनमें 76 वाणिज्यिक एयरलाइन और 14 भारतीय वायु सेना से संबंधित थीं।

vi. ऑपरेशन अजय के तहत, अक्टूबर 2023 में 6 चार्टर उड़ानों द्वारा कुल 1343 व्यक्तियों को इज़रायल से वापस लाया गया। इन 1343 व्यक्तियों में से 1309 भारतीय नागरिक, 14 ओसीआई कार्ड धारक और 20 नेपाली नागरिक थे।

*****

अनुबंध–क

नेबरहुड फर्स्ट नीति

भारत की 'नेबरहुड फर्स्ट नीति' अपने निकटतम पड़ोसी क्षेत्र में स्थित देशों, अर्थात अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, मालदीव, म्यांमार, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका के साथ संबंधों के प्रबंधन के संबंध में भारत के दृष्टिकोण का मार्गदर्शन करती है। 'नेबरहुड फर्स्ट नीति' का उद्देश्य अन्य बातों के साथ–साथ पूरे क्षेत्र में वास्तविक, डिजिटल और लोगों के पारस्परिक संपर्कों को बढ़ावा देना तथा व्यापार और वाणिज्य में वृद्धि करना है। यह नीति सरकार की सभी संगत शाखाओं के लिए एक संस्थागत प्राथमिकता के रूप में विकसित हो गई है जो हमारे पड़ोसी देशों के साथ संबंधों और नीतियों का प्रबंधन करती है।

एक्ट ईस्ट पॉलिसी

दक्षिण पूर्व एशियाई क्षेत्र के देशों के साथ संबंधों को और मजबूत करने के उद्देश्य से, 1992 में आरंभ की गई भारत की 'लुक ईस्ट पॉलिसी' को 2014 में 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' के रूप में अपग्रेड कर दिया गया, जिसमें भारत–प्रशांत क्षेत्र में विस्तारित पड़ोसी क्षेत्र पर सक्रिय और व्यावहारिक रूप से ध्यान केंद्रित किया गया था। भारत की 'एक्ट ईस्ट नीति' का उद्देश्य भारत–प्रशांत क्षेत्र के देशों के साथ आर्थिक सहयोग, सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देना तथा रणनीतिक संबंधों को विकसित करना है। 'एक्ट ईस्ट नीति' व्यापक अर्थों में कनेक्टिविटी को इस क्षेत्र के विकास और समृद्धि के मूल मंत्र के रूप में स्वीकार करती है, जिसमें वास्तविक, डिजिटल, आर्थिक और लोगों की पारस्परिक आवाजाही शामिल है। दक्षिण–पूर्व देशों के संगठन (आसियान) के साथ भारत का संबंध भारत की 'एक्ट ईस्ट नीति' के मूल में निहित है। इसके अलावा, इस क्षेत्र के देशों के साथ द्विपक्षीय संबंधों को सुदृढ़ करने के साथ–साथ, भारत ने इस क्षेत्र के विभिन्न बहुपक्षीय और बहुआयामी संस्थाओं में भी अपनी भागीदारी बढ़ाई है, जैसे आसियान, पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन, आसियान रक्षा मंत्रियों की बैठक, आसियान क्षेत्रीय मंच, विस्तारित आसियान समुद्री मंच, हिंद महासागर रिम एसोसिएशन, हिंद महासागर आयोग, हिंद महासागर नौसेना सिम्पोज़ियम, क्वाड, इत्यादि।

थिंक वैस्ट नीति

खाड़ी क्षेत्र और पश्चिम एशियाई देशों तक भारत की पहुंच भारत की विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बन गई है। यह क्षेत्र परंपरागत रूप से भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण रहा है। इस क्षेत्र में भारतीय प्रवासियों का कल्याण भी एक उच्च प्राथमिकता है। 'थिंक वैस्ट नीति' के तहत, इन देशों के साथ भारत के संबंध सहयोग के पारंपरिक क्षेत्रों से आगे बढ़ गए हैं। निरंतर होने वाली उच्च–स्तरीय यात्राओं, व्यापार और निवेश में वृद्धि के माध्यम से तथा ऊर्जा, सुरक्षा, रक्षा, संस्कृति, शिक्षा, स्वास्थ्य और निवेश वृद्धि जैसे क्षेत्रों में संबंधों के मजबूत होने से पश्चिम एशिया के देशों के साथ संबंध लगातार प्रगाढ़ हो रहे हैं।

कनेक्ट सेंट्रल एशिया नीति

'कनेक्ट सेंट्रल एशिया नीति' के तहत मध्य एशियाई क्षेत्र के साथ गहन, सार्थक और सतत संबंधों की परिकल्पना की गई है। इसे इस दिशा में किए गए निरंतर प्रयासों, विशेष रूप से 'भारत–मध्य एशिया शिखर सम्मेलन' तंत्र के संस्थानीकरण द्वारा कार्यान्वित किया गया है। 'कनेक्ट सेंट्रल एशिया नीति' मध्य एशियाई क्षेत्र के साथ भारत के ऐतिहासिक और सभ्यतागत संबंधों का लाभ उठाने तथा रणनीतिक और सुरक्षा सहयोग को सुदृढ़ करने, क्षमता निर्माण, आर्थिक और वाणिज्यिक सहयोग,कनेक्टिविटी और लोगों के पारस्परिक संबंधों में वृद्धि करने पर भी ध्यान केंद्रित करती है।

सागर

'क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास' (सागर) अवधारणा को पहली बार 2015 में मॉरीशस में प्रधान मंत्री द्वारा व्यक्त किया गया था। इस अवधारणा के तहत, भारत एक स्वतंत्र, मुक्त, समावेशी, शांतिपूर्ण और समृद्ध भारत–प्रशांत क्षेत्र की परिकल्पना करता है, जिसका निर्माण एक नियम–आधारित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था, वहनीय और पारदर्शी अवसंरचना निवेश, नौपरिवहन और ओवर–फ्लाइट की स्वतंत्रता, निर्बाध वैध वाणिज्य, संप्रभुता हेतु पारस्परिक सम्मान, विवादों के शांतिपूर्ण समाधान तथा सभी राष्ट्रों की समानता के आधार पर किया गया है। 'सागर' द्वारा निर्देशित होने के परिणामस्वरूप भारत हिंद महासागर क्षेत्र में कनेक्टिविटी, क्षमता निर्माण, आपदा प्रबंधन, लोगों के पारस्परिक आदान–प्रदान में वृद्धि, सतत विकास संवर्धन, अवैध, असूचित, अनियंत्रित मत्स्यन के संबंध में जागरूकता, समुद्री सुरक्षा और संरक्षा में वृद्धि तथा अंतर्जलीय क्षेत्र संबंधी जागरूकता को मजबूत करने में पूर्ण योगदान दे रहा है।

*****